2024

प्रश्न: वे कौन-सी घटनाएँ थीं जिनके कारण भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ? इसके परिणामों को स्पष्ट कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

What were the events that led to the Quit India Movement? Point out its results.

उत्तर: 8 अगस्त 1942 को शुरू हुआ भारत छोड़ो आंदोलन भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने की दिशा में किया गया व्यापक विरोध प्रदर्शन था, जो संवैधानिक सुधारों की पूर्व की मांगों से एक बदलाव का संकेत था।

आंदोलन हेतु उत्तरदायी घटनाएँ

- **द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की सहमति के बिना भागीदारी:** ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से परामर्श किये बिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में भागीदार के रूप में घोषित कर दिया।
- **क्रिप्स मिशन की विफलता (1942):** इसके प्रस्तावों में स्वायत्तता के बारे में अस्पष्ट दृष्टिकोण के साथ केवल डोमिनियन स्टेटस देना निर्धारित किया गया था।
- **असंतोष को बढ़ावा:** युद्ध के दौरान भारत को अत्यधिक मुद्रास्फीति एवं खाद्यान्न की कमी के साथ भुखमरी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- **जन-आंदोलन की प्रेरणा:** असहयोग आंदोलन (1920) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) जैसे पूर्व के आंदोलनों से व्यापक जन-आंदोलन का मज़बूत आधार तैयार हुआ।
- **तत्काल स्वतंत्रता का आह्वान:** महात्मा गांधी की "करो या मरो" की घोषणा से इस आंदोलन की आधिकारिक शुरुआत हुई।

आंदोलन के परिणाम

- **व्यापक भागीदारी:** इसमें छात्रों, महिलाओं, श्रमिकों एवं कृषकों सहित समाज के सभी वर्गों ने भागीदारी की।
- **भूमिगत गतिविधियाँ:** इस दौरान जयप्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली जैसे नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों को अपनाया।
- **औपनिवेशिक शासन का कमज़ोर होना:** इस आंदोलन से ब्रिटिश प्रभाव में कमी के साथ भारतीयों द्वारा औपनिवेशिक शासन को अस्वीकार करने के संकल्प पर प्रकाश पड़ा।
- इस दौरान स्थानीय लोगों ने स्वतंत्रता की घोषणा करने के साथ समानांतर सरकारें (जैसा कि बलिया और तामलुक में हुआ) गठित की।

निष्कर्ष: भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन के ताबूत में अंतिम कील था क्योंकि इससे न केवल पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को बल मिला बल्कि इसका प्रभाव वर्ष 1946 की कैबिनेट मिशन योजना पर भी देखा गया, जिससे अंततः वर्ष 1947 की भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

प्रश्न: भारत में हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के ह्रास के लिये इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति कहाँ तक उत्तरदायी थी?

(250 शब्द, 15 अंक)

How far was the Industrial Revolution in England responsible for the decline of hadicrafts and cottage industries in India?

उत्तर: 18वीं सदी के अंत में ब्रिटेन में आरंभ हुई औद्योगिक क्रांति, तीव्र औद्योगिकीकरण का दौर था, जिसके कारण कारखाने, मशीनीकृत उत्पादन और भाप इंजन का विकास हुआ, जिससे वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन हुआ। ब्रिटिश उपनिवेश इन वस्तुओं के लिये बाज़ार और संसाधन भंडार दोनों के रूप में काम करते थे, जिनमें कपास, नील तथा अन्य संसाधन शामिल थे।

औद्योगिक क्रांति और हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योग में गिरावट

- **हस्त निर्मित बनाम मशीन निर्मित उत्पाद:** बड़े पैमाने पर उत्पादित मशीन निर्मित उत्पादों के सब्सिडीयुक्त प्रवाह से हस्तनिर्मित और महँगे भारतीय सामान बाज़ार से बाहर हो गए।
- **भेदभावपूर्ण नीतियाँ:** ब्रिटिश ने अहस्तक्षेप की नीति लागू की, जिसके तहत इंग्लैंड को निर्यात किये जाने वाले भारतीय सामानों पर उच्च शुल्क लगाया गया, जबकि सस्ते ब्रिटिश सामानों को न्यूनतम शुल्क के साथ भारत में प्रवेश की अनुमति दी गई।
- **बेरोज़गारी और कृषि की ओर रुझान:** स्थानीय बाज़ारों के पतन से कलाकारों की आजीविका प्रभावित हुई और उनमें से कई ने धनी और शक्तिशाली लोगों का संरक्षण खो दिया।
- बेरोज़गार कार्यबल को जीवित रहने के लिये अपना काम छोड़कर कृषि या अन्य निचले स्तर के कार्य करने के लिये मज़बूर होना पड़ा।
- **शोषणकारी खेती:** बड़े पैमाने पर भूमि वाले लोगों को नकदी फसल के रूप में विशिष्ट फसलों की खेती करने के लिये मज़बूर किया जाता था, जो ब्रिटिश उद्योगों के लिये आवश्यक थीं। उदाहरण के लिये, नील की खेती।
- **नवप्रवर्तन में अंततः गिरावट:** सस्ते मशीन -निर्मित उत्पादों के प्रचलन से हस्तनिर्मित वस्तुओं की मांग कम हो गई, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन और गुणवत्ता में कमी आई, क्योंकि कारीगर नवप्रवर्तन करने में असमर्थ थे।

भारतीय परिप्रेक्ष्य

- **धन की निकासी:** दादाभाई नौरोज़ी के सिद्धांत ने इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार ब्रिटिश शोषण ने भारत के धन की निकासी की, जिससे औद्योगिक वृद्धि और विकास में बाधा उत्पन्न हुई।
- **स्वदेशी आंदोलन:** महात्मा गांधी ने इस बात पर बल दिया कि ब्रिटिश औद्योगीकरण भारतीयों की आजीविका की कीमत पर आया था और उन्होंने भारतीयों से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का आग्रह किया।

- **जवाहरलाल नेहरू:** अपनी पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश नीतियों ने भारत को औद्योगिकीकरण से वंचित कर दिया, तथा इसे विनिर्माण केंद्र से कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता में बदल दिया।

निष्कर्ष: औद्योगिक क्रांति के कारण भारतीय समाज को जो संरचनात्मक क्षति हुई, वह आज भी बनी हुई है। हालाँकि, हमारे संविधान निर्माताओं ने भारत जैसे देश के लिये कुटीर उद्योग की ताकत को समझा और इसलिये अनुच्छेद 43 में स्पष्ट रूप से देश को उन्हें स्थापित करने के लिये प्रेरित किया।

2023

प्रश्न: महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर में शिक्षा और राष्ट्रवाद के प्रति सोच में क्या अंतर था? (150 शब्द, 10 अंक)

What was the difference between Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore in their approach towards education and nationalism?

उत्तर: ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के साझा उद्देश्य के बावजूद भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दो प्रमुख व्यक्तियों के रूप में महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर में शिक्षा और राष्ट्रवाद के प्रति सोच में काफी अंतर था।

महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर की विचारधाराओं में अंतर

महात्मा गांधी	रवींद्रनाथ टैगोर
शिक्षा: ❑ महात्मा गांधी 'नई तालीम' अथवा 'बुनियादी शिक्षा' की अवधारणा में विश्वास करते थे। ❑ उन्होंने व्यावहारिक, बौद्धिक और नैतिक कौशल में वृद्धि करने वाली समग्र शिक्षा को प्रोत्साहित किया। ❑ उन्होने अभिजात वर्ग और आमजन के बीच की असमानताओं को कम करने के लिये व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया।	**शिक्षा:** ❑ टैगोर अधिक उदार और विश्वव्यापी शिक्षा के समर्थक थे। ❑ उन्होंने कला, रचनात्मकता और सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिये शांति निकेतन की स्थापना की। ❑ उनका दर्शन विश्व की विविध संस्कृतियों को महत्त्व देने और उन्हें समृद्ध करने वाले लोगों के सर्वांगीण समूह को विकसित करने पर आधारित था।
राष्ट्रवाद ❑ अहिंसा का 'सत्याग्रह' उनके राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषताएँ थी। ❑ गांधी का राष्ट्रवाद आत्मनिर्भरता, आत्मसामर्थ्य और स्वराज के विचार में निहित था। ❑ ब्रिटिश शासन को कमजोर करने के तरीकों के रूप में उन्होंने ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों के बहिष्कार के विचार को बढ़ावा दिया।	**राष्ट्रवाद** ❑ टैगोर का दृष्टिकोण अधिक विश्वव्यापी और कम आक्रामक था। ❑ उन्होंने सांस्कृतिक एकता और सद्भाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए विश्वव्यापी राष्ट्रवाद की कल्पना की। ❑ वह भारत की विरासत को पूर्व और पश्चिम के बीच एक कड़ी के रूप में देखते थे तथा उनका मानना था कि राष्ट्रवाद का उद्देश्य भारत को वैश्विक समाज से अलग रखने के बजाय एकीकृत करना होना चाहिये

हालाँकि महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद अहिंसा और व्यावहारिक शिक्षा पर केंद्रित था, किंतु उदारवादी दृष्टिकोण वाले टैगोर राष्ट्रवाद के संदर्भ में सार्वभौमिक दृष्टिकोण रखते थे।

प्रश्न: विश्व के विभिन्न देशों में रेलवे के आगमन से होने वाले सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को उजागर कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Bring out the socio-economic effects of the introduction of railways in different countries of the world.

उत्तर: रेलवे, मानव इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है, क्योंकि इसने विश्व भर में परिवहन, संचार तथा व्यापार को परिवर्तित करने में भूमिका निभाई है।

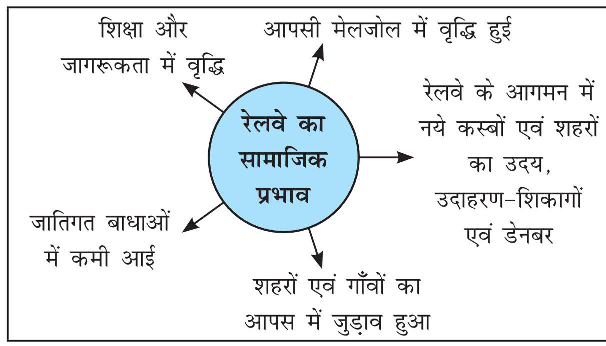

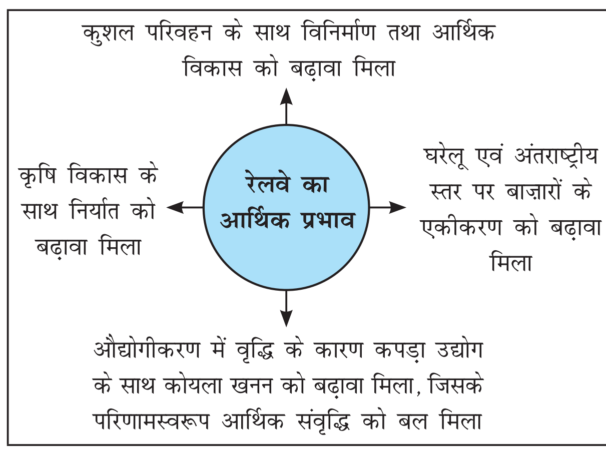

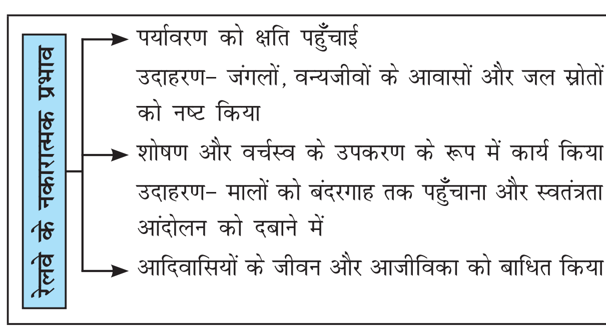

रेलवे ने विभिन्न राष्ट्रों के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को प्रभावी ढंग से परिवर्तित किया है, जिसके परिणामस्वरूप विकास के साथ-साथ कनेक्टिविटी और औद्योगीकरण को बढ़ावा मिला।

नोटः भारत के परिदृश्य में हम देखते हैं कि रेलवे ने जहाँ भारत में राष्ट्रवाद के उद्‌भव तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसी प्रकार वर्तमान समय में भी रेलवे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जैसे- वंदे भारत ट्रेन आदि।

प्रश्नः भारत में औपनिवेशिक शासन ने आदिवासियों को कैसे प्रभावित किया और औपनिवेशिक उत्पीड़न के प्रति आदिवासी प्रतिक्रिया क्या थी? (250 शब्द, 15 अंक)

How did the colonial rule affect the tribals in India and what was the tribal response to the colonial oppression?

उत्तर: औपनिवेशिक शक्तियों (विशेषकर ब्रिटिशों के आगमन) के कारण आदिवासी समुदायों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। इसे आदिवासी लोगों के विस्थापन, भूमि पर कब्ज़े, शोषण एवं पारंपरिक जीवनशैली के क्षरण के रूप में चिह्नित किया जाता है।

सल्तनत काल के दौरान किये गए प्रमुख तकनीकी बदलाव

- **वन नीतियाँः** अंग्रेज़ों द्वारा लागू वन नीतियों के कारण आदिवासी समुदायों की वनों तक पहुँच प्रतिबंधित होने से उनकी आजीविका प्रभावित हुई।
- **विस्थापन और भूमि पर कब्ज़ाः** औपनिवेशिक शासन के सबसे प्रमुख प्रभावों में से एक आदिवासी समुदायों का विस्थापन और इनकी भूमि पर कब्ज़ा होना था
- **शोषणकारी श्रम प्रथाएँः** आदिवासी समुदाय प्रायः शोषणकारी श्रम प्रथाओं का शिकार हुए। ब्रिटिश प्रशासन ने कई जनजातियों को खनन वृक्षारोपण कार्य एवं सड़क निर्माण जैसी श्रम केंद्रित गतिविधियों को करने के लिये मज़बूर किया था।
- **सांस्कृतिक क्षरणः** औपनिवेशिक कानूनों, शिक्षाप्रणालियों एवं धार्मिक प्रथाओं को लागू करने से आदिवासी संस्कृतियों और परंपराओं का क्षरण हुआ

औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ आदिवासी समुदायों की प्रतिक्रियाएँ

- **सशस्त्र प्रतिरोधः** आदिवासी समुदायों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध किया। उन्होंने अपनी भूमि, संस्कृति एवं जीवनशैली की रक्षा के लिये विद्रोह की योजना बनाई। उदाहरण-संथाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह, कोया विद्रोह।
- **सांस्कृतिक क्षरणः** कुछ आदिवासी समुदायों ने औपनिवेशिक प्रभाव के बावजूद अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं को संरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- **गोरिल्ला युद्धः** कुछ आदिवासी समुदायों ने औपनिवेशिक शक्तियों का विरोध करने के लिये गोरिल्ला युद्ध रणनीति अपनाई। उन्होंने स्थानीय इलाके से संबंधित जानकारी का लाभ उठाते हुए गोरिल्ला युद्ध रणनीतियों का उपयोग किया।

भारत में औपनिवेशिक उत्पीड़न के प्रति आदिवासी समुदायों ने विभिन्न प्रतिक्रियाएँ (जिनमें सशस्त्र प्रतिरोध एवं अहिंसक आंदोलन) की थी, जिनका उद्देश्य अपने अधिकारों, संस्कृति तथा पारंपरिक जीवनशैली की रक्षा करना था। इन प्रयासों से आधुनिक भारत में आदिवासी अधिकारों और विकास के संबंध में जारी चर्चाओं एवं नीतियों में योगदान मिला।

2022

प्रश्नः अधिकांश भारतीय सिपाहियों वाली ईस्ट इंडिया की सेना क्यों तत्कालीन भारतीय शासकों की संख्या बल में अधिक और बेहतर सुसज्जित सेना से लगातार जीतती रही? (150 शब्द, 10 अंक)

Why did the armies of the British East India Company, mostly comprising of Indian Soldiers, win consistently against the more numerous and better equipped armies of the then Indian rulers? Give reasons.

उत्तर: ब्रिटिश सेना के अधिकांश सिपाही भारतीय थे, फिर भी ब्रिटिश सेना की संख्या भारतीय राजाओं/शासकों की सेना से कम थी, क्योंकि शासकों के पास एक बड़ी पैदल सेना, घुड़सवार सैनिक व हाथी दल थे। इन खूबियों के बावजूद कंपनी की सेना लगातार भारतीय शासकों की सेना से जीतती रही, जिसके निम्नलिखित कारण थे-

(i) ब्रिटिशों के तोप व असॉल्ट राइफलें भारतीय हथियारों के रेंज व शूटिंग गति से अधिक उन्नत थीं।

(ii) भारतीय शासक अंग्रेज़ अधिकारियों के समान युद्ध रणनीति बनाने में असमर्थ थे।

(iii) भारतीय शासक नियमित वेतन भुगतान में असमर्थ, किंतु ब्रिटिश नकद वेतन देते थे।

(iv) कुछ भारतीय शासक भाड़े के सैनिकों पर निर्भर, जिनमें राष्ट्रीयता का अभाव।

(v) अंग्रेज़ों के पास रॉबर्ट क्लाइव, वॉरेन हेस्टिंग्स, सर आयरकूट एवं आर्थर वेलेजली जैसे प्रभावी नेतृत्वकर्त्ता थे।

(vi) ब्रिटिशों को धन और अन्य संसाधनों के रूप में सरकारी सहायता मिली।

(vii) भारतीय शासकों में एक सामंजस्यपूर्ण राजनीतिक राष्ट्रवाद का अभाव था।

उपरोक्त विवरण से कहा जा सकता है कि केवल बड़ी सेना ही किसी विजय का एकमात्र कारण नहीं हो सकती। इसके लिये कुशल नेतृत्व, विशिष्ट हथियार व सटीक रणनीति जैसे कारक भी उत्तरवादी होते हैं। सबसे बढ़कर वफादारी व राष्ट्रवादी जैसी भावना युद्ध विजय की मूल मांग है।

प्रश्नः क्यों औपनिवेशिक भारत की अठारहवीं शताब्दी के मध्य से अकाल पड़ने में अचानक वृद्धि देखने को मिलती है? कारण बताएँ। (150 शब्द, 10 अंक)

Why was there a sudden spurt in famines in colonial India since the mid-eighteenth century? Give reasons.

उत्तर : भोजन के अभाव की व्यापक स्थिति अकाल कहलाती है। सामान्यत: अकाल एक प्राकृतिक आपदा की भाँति है, किंतु 18वीं शताब्दी के मध्य में बंगाल काठियावाड़ क्षेत्र, गुंटूर व ओड़िसा में पड़े अकालों के लिये ज्यादातर ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियाँ ज़िम्मेदार थीं।

इन अकालों के पड़ने के पीछे निम्नलिखित कारणों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है–

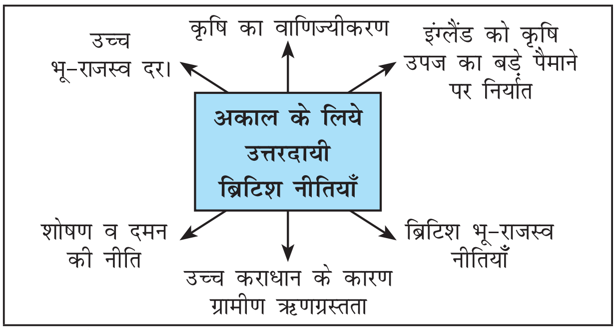

हालाँकि इन अकालों के लिये ब्रिटिश नीतियों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारक भी उत्तरदायी थे–

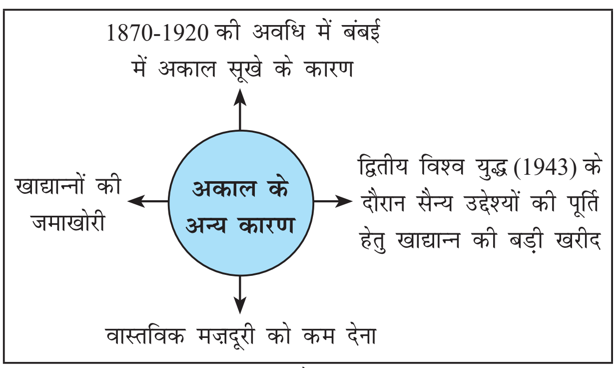

अत: यह कहा जा सकता है कि 18वीं सदी के मध्य में पड़े अकालों के लिये मुख्यत: ब्रिटिश नीतियाँ ही ज़िम्मेदार थीं, किंतु कुछ प्राकृतिक व वैश्विक कारकों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

2021

प्रश्न: यंग बंगाल और ब्रह्म समाज के विशेष संदर्भ में सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के उत्थान और विकास को रेखांकित कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Trace the rise and growth of socio-religious reform movements with special reference to Young Bengal and Brahmo Samaj.

उत्तर : 19वीं शताब्दी के धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों का भारतीय इतिहास में विशेष स्थान है। ये आंदोलन बहुमुखी स्वरूप और व्यापकता लिये हुए थे, इसी कारण इन आंदोलनों ने देश में व्याप्त तत्कालीन जड़ता को समाप्त करने और आम जीवन को बदलने का प्रयास किया। भारतीय भी यूरोपीय सिद्धांतों (मानवतावाद, तर्कवाद) से परिचित होकर अपना उत्थान करना चाहते थे। इसी संदर्भ में राजा राममोहन राय और हेनरी विवियन डेरोजियो ने भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन की शुरुआत की।

ब्रह्म समाज और राजा राममोहन राय का योगदान

- यह आधुनिक भारत के सभी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आंदोलनों का अग्रदूत था। यह वर्ष 1866 में दो भागों में विभाजित हो गया– ब्रह्म समाज एवं आदि ब्रह्म समाज
- आधुनिक भारत में पहला बौद्धिक सुधार आंदोलन था। इससे भारत में तर्कवाद और प्रबोधन का उदय हुआ, जिसने अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रवादी आंदोलन में योगदान दिया
- यह प्रार्थना, ध्यान और शास्त्रों को पढ़ने पर केंद्रित था
- राजा राममोहन राय ने वर्ष 1828 में ब्रह्म सभा की स्थापना की, जिसे बाद में ब्रह्म समाज कहा गया
- यह पुरोहितों, अनुष्ठानों और बलि आदि के खिलाफ था।

यंग बंगाल और डेरोजियो का योगदान

- कलकत्ता के हिंदू कॉलेज में एक शिक्षक के रूप में प्रवेश
- डेरोजियो ने अपने शिक्षण के माध्यम से साहित्य, दर्शन इतिहास और विज्ञान पर बहस व चर्चा के लिये संघ बनाया, ताकि मौलिक विचारों को बढ़ावा दिया जा सके।
- फ्राँसीसी क्रांति (1789 ई.) के आदर्शों और ब्रिटेन की उदारवादी सोच को संजोया।
- 22 वर्ष की अल्प आयु में डेरोजियो की हैजा से मौत हो गई
- डेरोजियो और उनके प्रसिद्ध अनुयायी, जिन्हें डेरजियन और यंग बंगाल के नाम से जाना जाता था, तेजस्वी देशभक्त थे।
- अनुयायियों और छात्रों को उनके अधिकारों की मांग हेतु प्रेरित किया

अत: कट्टरता, अंधविश्वास, अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सामाजिक असमानता और निरक्षरता जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के अलावा सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों ने औपनिवेशिक शासन द्वारा बनाए गए नस्लवाद से निपटने में मदद की।

प्रश्न: नरमपंथियों की भूमिका ने किस सीमा तक व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन का आधार तैयार किया? टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

To what extent did the role of the Moderates prepare a base for the wider freedom movement? Comment.

उत्तर : कॉन्ग्रेस के अस्तित्व के पहले चरण को उदारवादी चरण (1885–1905) के रूप में जाना जाता था। नरमपंथियों का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन प्राप्त करना था। वे हिंसा और टकराव के बजाय धैर्य व सुलह में विश्वास करते थे। इस प्रकार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये संवैधानिक एवं शांतिपूर्ण तरीकों पर भरोसा करते थे। इसके मुख्य नेता दादाभाई नौरोजी, डब्ल्यू. सी. बैनर्जी, एस. एन. बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले आदि थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में नरमपंथियों की भूमिका

- राजनीतिक कार्य करने के तरीके, उदाहरण– लोगों को शिक्षित करने, राजनीतिक चेतना जगाने और जनमत बनाने के लिये सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मामलों से संबंधित बैठक तथा चर्चा कीं।
- उस समय की सबसे प्रगतिशील ताकतों का प्रतिनिधित्व करते थे।
- समान हितों वाले सभी भारतीयों के लिये एक व्यापक राष्ट्रीय जागृति पैदा करने में सक्षम।
- लोगों को राजनीतिक कार्यों में प्रशिक्षित किया और आधुनिक विचारों को लोकप्रिय बनाया।
- इनके द्वारा पारित करवाए गए 1892 एक्ट (भारतीय परिषद अधिनियम) द्वारा विधानमंडलों के सदस्यों को निर्धारित नियमों के बजट एवं वित्तीय मामलों पर बहस करने का सीमित अधिकार प्राप्त हुआ।
- मूल राजनीतिक सत्य को स्थापित करने में सक्षम थे। भारतीयों के हित में भारत पर शासन किया जाना चाहिये।
- आने वाले वर्षों में अधिक सशक्त, उग्रवाद, जन-आधारित राष्ट्रीय आंदोलन के लिये एक ठोस आधार प्रदान किया।
- आर्थिक राष्ट्रवाद को प्रेरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका, उदाहरण– दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' में निकासी का सिद्धांत दिया।

उदारवादियों के अपने लोकतांत्रिक आधार एवं अपनी मांगों के विफल रहने के कारण

- ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाए।
- प्रार्थना, याचिका और विरोध जैसी राजनीति कारगर नहीं हो सकी।
- बंगाल का विभाजन लोगों की इच्छा के विरुद्ध था।
- जन भागीदारी की कमी के कारण नरमपंथी अधिकारियों के खिलाफ जुझारू राजनीतिक स्थिति नहीं ले सकें।
- संकीर्ण सामाजिक आधार होने के कारण जनता ने निष्क्रिय भूमिका निभाई
- आरंभिक राष्ट्रवादियों का जनता में राजनीतिक विश्वास, निष्क्रिय भूमिका निभाई।
- आरंभिक राष्ट्रवादियों का जनता में राजनीतिक विश्वास नहीं था।

उदारवादियों ने व्यापक राष्ट्रीय जाग्रति लाने तथा जनता में भारतीय राष्ट्र का सदस्य होने की भावना जगाने में सफलता प्राप्त की। साम्राज्यवाद की उनकी आर्थिक आलोचना बाद में राष्ट्रीय आंदोलन का महत्त्वपूर्ण अस्त्र बन गई। उनके आंदोलन की महत्त्वपूर्ण कमी थी कि वे जनता को आंदोलन में शामिल नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने यह बुनियाद बनाई जिस पर राष्ट्रीय आंदोलन और विकसित हुआ।

प्रश्न: असहयोग आंदोलन एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

Bring out the constructive programmes of Mahatma Gandhi during Non-Cooperation Movement and Civil Disobedience Movement.

उत्तर: गांधी की राष्ट्रीय उत्थान की व्यापक योजना, जिसे उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रम का नाम दिया, का उद्देश्य सत्य और अहिंसा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना था। चूँकि कोई भी आंदोलन सतत् नहीं चलाया जा सकता। अत: गांधीजी ने संघर्ष विराम की रणनीति अपनाई।

असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान रचनात्मक कार्यक्रम

अस्पृश्यता का उन्मूलन
- गांधी ने माना कि अस्पृश्यता भारतीय समाज पर एक धब्बा और अभिशाप है। गांधी ने इस बुराई को खत्म करने का प्रयास किया।
- उन्होंने 1932 में अपने पूना समझौते के बाद अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिये हरिजन सेवक संघ की स्थापना की।

सांप्रदायिक एकता
- केवल एक राजनीतिक एकता नहीं बल्कि दिलों की अटूट एकता होनी चाहिये।
- यह लखनऊ संधि 1916 के दौरान हासिल की गई थी, जिसके तहत भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों से ब्रिटिश शासन के खिलाफ दोबारा मिलाया।
- लखनऊ समझौते ने खिलाफत और असहयोग आंदोलन की नींव रखी

महिलाओं का उत्थान
- स्वराज के अपने मिशन में गांधी को महिलाओं, किसानों और मजदूरों के सहयोग की आवश्यकता थी।
- 1930–32 के आंदोलन में महिलाओं में अभूतपूर्व जागरूकता पैदा की।
- गांधी के प्रयासों के कारण ही महिलाएँ पहली बार घरों से बाहर निकलीं और उन्होंने भारतीय राजनीतिक संघर्ष में भाग लिया।

खादी का वस्त्र बनाना
- गाँधी ने खादी को राष्ट्रवाद, आर्थिक स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया।
- उनका मानना था कि खादी के माध्यम से ही समाज का पुनर्निर्माण और विदेशी शासन के खिलाफ प्रभावी-सत्याग्रह संभव है।
- खादी का ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान में केंद्रीय स्थान है, जो अंतत: ग्राम स्वराज की प्राप्ति की ओर ले जाता है।

नई या बुनियादी शिक्षा
- गाँधी की नई शिक्षा की अवधारणा का तात्पर्य प्रकृति, समाज और शिल्प शिक्षा का विशाल माध्यम है। उदाहरण– वर्धा योजना में बुनियादी शिक्षा पर ज़ोर दिया गया।
- यह शिक्षा उनके लिये बेरोज़गारी के खिलाफ एक तरह की बीमा होनी चाहिये।
- उनके अनुसार, सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों को आध्यात्मिक, बौद्धिक शारीरिक संकाय की ओर खींचती और उत्तेजित करती है।

भारतीय समाज का एकीकरण शायद स्वतंत्रता की उपलब्धि से अधिक कठिन था, क्योंकि इस प्रक्रिया में हमारे अपने लोगों के समूह और वर्गों के बीच संघर्ष की संभावना मौजूद थी। इस परिदृश्य में गांधीवादी रचनात्मकता ने राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2020

प्रश्न: लॉर्ड कर्जन की नीतियों एवं राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके दूरगामी प्रभावों का मूल्यांकन कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)
Evaluate the policies of Lord Curzon and their long term implications on the national movement.

उत्तर: भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल के रूप में लॉर्ड कर्जन ने 1899 ई. से 1905 ई. तक अपनी सेवाएँ दीं। उनकी नीतियों से प्रतीत होता है कि वे एक साम्राज्यवादी प्रशासक थे। कर्जन ने भारतीय लोगों की भावनाओं और अपेक्षाओं की अनदेखी करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ करने का प्रयास किया, जिसके प्रभाव आगे के समय में देखे जा सकते हैं।

कर्जन की नीतियाँ
- **शिक्षा से संबधित:** उदाहरण– 1902 में विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति की और 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम बनाया।
- **रेलवे सेस संबंधित:** उदाहरण– 1902 रेलवे आयोग का गठन कर रेलवे लाइनों की संख्या को बढ़ाया।
- **विदेश नितियाँ:** उदाहरण– अफगान, उत्तर-पश्चिम सीमांत नीति, तिब्बत के प्रति नीति, फारस के साथ संबंध।
- **बंगाल विभाजन (1905):** उदाहरण– भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता का आगाज हो गया।
- **भारतीयों के प्रति अभद्र व्यवहार:** उदाहरण– उच्च पदों के लिये भारतीयों को अनुपयुक्त मानता था। इस व्यवहार से भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई।

कर्जन की नीतियाँ
- **राष्ट्रवादी भावनाओं में वृद्धि:** उदाहरण– स्वदेशी आंदोलन, वंदे मातरम इसी के परिणाम थे।
- **फूट डालो और राज करो की नीति का जन्म:** उदाहरण– भारतीय क्षेत्र पर नियंत्रण करने के लिये विभाजन की नीति शुरू की
- **उग्रवाद का उदय:** उदाहरण– कर्जन की सख्त नीतियों ने तिलक, लाला लाजपतराय और अन्य स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली विचारधाराओं को मज़बूत किया
- **भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण:** उदाहरण– भारत के गौरव को पुर्नजीवित करने के लिये पुरातत्त्व सर्वेक्षण की स्थापना की गई।
- **राष्ट्रवादी आंदोलन के लिये जाग्रति:** उदाहरण– स्वराज के लिये अनुरोध और अधिक तीव्र हो गया।

निष्कर्षत: कर्जन एक निरंकुश शासक था, उसके कार्यो के कारण भारतीयों में काफी नाराजगी थी, फिर भी उसकी दक्षता, उद्यम और अभियान या पहल के दृष्टिकोण से उसे कुशल शासक माना जाता है। कर्जन की नीतियाँ औपनिवेशिक हितों द्वारा संचालित थीं जिन्होंनें राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता को उग्र करने का कार्य किया।

प्रश्न: 1920 के दशक से राष्ट्रीय आंदोलन ने कई वैचारिक धाराओं को ग्रहण किया, अपना सामाजिक आधार बढ़ाया। विवेचना कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)
Since the decade of the 1920s, the national movement acquired various ideological strands and thereby expanded its social base. Discuss.

उत्तर: 1920 का दशक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिये विभिन्न विचारधाराओं के समामेलन द्वारा अपने सामाजिक आधार को विस्तृत करने का दशक रहा। इसमें न केवल गांधी जी के असहयोग आंदोलन का योगदान है, अपितु श्रमिक संघों, समाजवादियों, क्रांतिकारियों के आंदोलन ने भी अपनी भूमिका निभाई।

गांधीवादी विचारधारा और सत्याग्रह

राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा ग्रहण की गई विभिन्न विचारधाराएँ जिन्होंने सामाजिक आधार बढ़ाया
- **समाजवाद का उदय:** उदाहरण– नेहरू, बोस जैसे नेताओं के प्रभुत्व वाले आंदोलनों ने श्रमिकों और किसानों के मुद्दे को सक्रिय रूप से उठाया।
- **क्रांतिकारी विचारधारा:** उदाहरण–यह पद्धति राजनीतिक संघर्ष की राष्ट्रवादी रणनीति से असंतुष्ट लोगों द्वारा अपनाई गई।
- **जाति आधारित आंदोलन:** उदाहरण– अत्याचारों की प्रतिक्रिया के रूप में उभरे (जस्टिस पार्टी, स्वाभिमान आंदोलन, वायकोम सत्याग्रह)।
- **महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति अधिक मुखर हुईं:** उदाहरण– प्रेस और भारत स्त्री मंडल जैसे संगठनों की मदद ली।
- **किसानों के हितों को ध्यान में रखा गया:** उदाहरण– उत्तर प्रदेश में किरायेदारी कानूनों में संशोधन, कम किराये, बेदखली से सुरक्षा।
- **दलित उत्थान पर बल:** उदाहरण– नारायण गुरु और भीमराव अंबेडकर ने प्रयास किये। अंबेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना तथा संवैधानिक आरक्षण की मांग की।
- **साम्यवादी विचारधारा द्वारा मजदूर अधिकारों की बात:** उदाहरण– एन एम जोशी और वी.पी. वाडिया के नेतृत्व में ट्रेड यूनियन की स्थापना।
- **कांग्रेस की मांगों में परिवर्तन:** उदाहरण– स्वराज के स्थान पर पूर्ण स्वराज।
- **असहयोग की असफलता से उत्पन्न राजनीतिक शून्यता को भरने का प्रयास:** उदाहरण– वैचारिक मतभेदों के कारण स्वराज पार्टी का गठन।
- **स्वावलंबी बनाने पर जोर:** उदाहरण– लोगों को खादी से जोड़कर स्वदेशी पर बल।

निष्कर्षत: सभी बिंदुओं का विश्लेषण करने पर यह प्रतीत होता है कि 1920 का दशक विभिन्न विचारधाराओं को समाहित करता हुआ राष्ट्रीय आंदोलन के सामाजिक विस्तार का दशक बन गया।

2019

प्रश्न: 1857 का विप्लव ब्रिटिश शासन के पूर्ववर्ती सौ वर्षों में बार-बार घटित छोटे एवं बड़े स्थानीय विद्रोहों का चरमोत्कर्ष था। सुस्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

The 1857 Uprising was the culmination the recurrent big and small local rebellions that had occurred in the preceding hundred years of British rule. Elucidate.

उत्तर: 24 अगस्त, 1608 ई. को अन्य यूरोपीय कंपनियों की भाँति ही वाणिज्यिक लाभ प्राप्ति के लिये EIC सूरत में उतरी। चरणबद्ध रूप में बढ़ती आर्थिक तथा राजनीतिक (साम्राज्यवादी) महत्त्वाकांक्षा ने ब्रिटिशों को भारतीयों के विरुद्ध शोषणपूर्ण तथा बर्बर नीति अपनाने को प्रेरित किया।

1857 ई. से पूर्व के 100 वर्षों में ब्रिटिश कंपनी ने प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से आर्थिक शोषण, राजनीतिक अधीनता, भेदभावपूर्ण नीति, धार्मिक सांस्कृतिक हस्तक्षेप के कारण भरतीय जनता में रोष व्याप्त था। इसके रोष को 2 निम्न भागों में विभक्त कर सकते हैं–

नागरिक विद्रोह

- फकीर/संयासी विद्रोह (1770-1820) बंगाल, बिहार: तीर्थ यात्रा से लगाए प्रतिबंध के विरुद्ध
- राजा चैत का विद्रोह (1778-81) अवध: पूर्ववर्ती कृषि संबंधों की पुनर्बहाली
- पाइका विद्रोह (1817) ओडिशा: शोषणकारी नीति के विरुद्ध जमींदार व कृषकों का विरोध
- फराजी विद्रोह (1838-48): पूर्वी बंगाल

धार्मिक/आदिवासी विद्रोह

- भील विद्रोह (1818-31) पश्चिमी घाट कंपनी शासन के विरुद्ध
- कोल विद्रोह (1831-32) छोटा नागपुर, सिंहभूम दिकूओं को अपने क्षेत्र से भगाना
- संथाल विद्रोह (1855-56) बिहार ओडिशा
- हो तथा मुंडा (1820-37), छोटा नागपुर सिंहभूम- अंग्रेजों के भूमि हस्तगत के विरुद्ध

किसान विद्रोह

- पागलपंथी विद्रोह
- भोपाला विद्रोह (1836-54)

मूलत: 'पुन: स्थापनावादी' प्रवृत्तियों वाले ये विद्रोह स्थानीय हितों के लिये ही लड़े गए थे, जो अगले 100 वर्षों में एकमात्र शत्रु ब्रिटिश कंपनी के विरुद्ध एकजुट होते चले गए। अत: 1857 की क्रांति को कई विद्रोह तथा आंदोलनों का समाहार माना जा सकता है।

प्रश्न: 19वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रीय पहचान के उद्भव के मध्य सहलग्नताओं का परीक्षण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Examine the linkages between nineteenth century's 'Indian Renaissance' and the emergence of national identity.

उत्तर: सामान्यत: 'पुनर्जागरण' से अभिप्राय 'फिर से जागने' से रहा, जिसका संदर्भ यूरोप में 14वीं सदी के मध्य हुए सांस्कृतिक व धार्मिक सहित वैचारिक स्तर पर हुए बदलाव से लिया गया। भारत में भी 19वीं सदी में हुए सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक बदलाव के परिवर्तन को 'भारतीय पुनर्जागरण' कहा गया।

- **सक्षम व्यक्तित्वों का उद्भव:** राजा राममोहन, ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे आधुनिक विचारधारा वाले लोगों ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाने के साथ सामाजिक सुधार का प्रयास।
- **नवचेतना तथा मध्यवर्गीय बौद्धिक वर्ग का उदय:** समानता, स्वतंत्रता व राष्ट्रवाद के विचारों को आम जनता के मध्य प्रसारित कर, भारतीयता की भावना को जागृत किया।
- **भारतीय साहित्य का उत्थान व योगदान:** रवींद्र नाथ टैगोर, सरोजनी नायडू जैसे साहित्यकारों की रचना ने आम लोगों में राष्ट्रीय पहचान को प्रबल किया।
- **स्वयं के इतिहास का गर्व:** भारतीयों ने आर्यभट्ट, शंकराचार्य व कौटिल्य की दृष्टि से अपने अतीत का अवलोकन किया, जो तथाकथित आधुनिक पश्चिमी नवविचारों के समकक्ष अथवा उससे श्रेष्ठ रहीं।

आध्यात्मिकता के सार में निहित भारतीय सभ्यता ने अपने सुनहरे अतीत को पहचाना। फलत: भारतीयों ने भौतिकवादी पश्चिमी संस्कृति तथा उसके साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध एकजुटता दिखाई तथा अंतत: 1947 ई. में राष्ट्र स्वतंत्र हुआ।

प्रश्न: गांधीवाद प्रावस्था के दौरान विभिन्न स्वरों ने राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया था। विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Many voices had strengthened and enriched the nationalist movement during the Gandhian phase. Elaborate.

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में 1917 से 1947 ई. तक का काल गांधीवादी काल से जाना गया। इस काल की विशेषता निश्चय ही गांधी के सविनय अवज्ञा, असहयोग तथा सत्याग्रह जैसे अहिंसक तथा शांतिपूर्ण विचार रहे, परंतु इस विचारधारा के अतिरिक्त भी अन्य प्रकृति के मतों ने स्वतंत्रता संघर्ष तथा स्वतंत्रता की मांग को प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ करने वाले विभिन्न स्वर

- **खिलाफत आंदोलन (1919-24)**
  - गाँधी के अहसयोग आंदोलन के दौरान तुर्की के खलीफा के समर्थन में भारतीय मुसलमानों का धार्मिक समर्थन
- **महिला वर्ग**
  - धरसाना सत्याग्रह में सरोजनी नायडू के अलावा विजय लक्ष्मी पंडित कस्तूरबा गांधी जैसे कई महिलाओं ने स्वतंत्रता संघर्ष को गति दी।
- **श्रमिक वर्ग**
  - अहमदाबाद मिल आंदोलन से प्रारंभ, श्रमिक वर्ग के योगदान को आगे के अनेक आंदोलन उपस्थिति के रूप में देखा जा सकता है।
- **क्रांतिकारी विचारधारा**
  - राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह ने एक सीमा तक हिंसात्मक कृत्यों द्वारा भारत को यथाशीघ्र स्वतंत्र कराने का प्रयास किया।
- **हिंदू राष्ट्रवादी**
  - 1925 तथा 1925 में गठित हिंदू महसभा व RSS ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में भारतीय राष्ट्रवाद को प्राचीन इतिहास से जोड़ते हुए बढ़ावा दिया।
- **समाजवादी विचार**
  - रूसी क्रांति (1917) से निकले विचारों ने JL नेहरू, SC बोस जैसे युवा कांग्रेसी नेताओं को कांग्रेस संगठन में भी समाजवादी विचारों को बढ़ावा दिया।
  - 1923 में केंद्रीय विधानसभा चुनाव में स्वराजवादियों को चुनाव लड़ना भी इसी विचारधारा से संबंधित था।
- **व्यापारी/पूंजीपति वर्ग**
  - AITUC के नेतृत्व में आयातित वस्तुओं के बहिष्कार सहित श्रमिक वर्ग को वित्तीय सहायता।

यद्यपि स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान इन विभिन्न विचारधाराओं में विरोधाभासी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, जिसने आंदोलन को एक सीमा तक कमज़ोर भी किया; लेकिन दूसरी तरफ इसने वैकल्पिक दृष्टिकोण लाने के साथ भारतीय लोकतंत्र के नींव को भी मज़बूत किया।

प्रश्नः 1940 के दशक के दौरान सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया को जटिल बनाने में ब्रिटिश साम्राज्यिक सत्ता की भूमिका का आकलन कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Assess the role of British imperial power in complicating the process of transfer of power during the 1940s.

व्याख्या: भारत के पड़ोसी देशों की साथ संबंधों के अनेक समस्याओं के मूल को 1940 के बाद के ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों में ढूंढा जा सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-44) के दौरान भारत के असहयोगात्मक रवैया, ब्रिटिश शासन पर बढ़ते वित्तीय तथा राजनीतिक दबाव तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ती गुटबंदी के कारण अंग्रेज़ों को अंततः भारत को स्वतंत्र करना पड़ा।

ब्रिटिश क्राउन कभी भी संसाधन-संपन्न भारतीय उपनिवेश को ऐच्छिक रूप से स्वतंत्र करने का पक्षधर नहीं रहा, यही कारण था कि शासन ने 'डोमिनियन स्टेट' का दर्जा देने की नाकाम कोशिश की।

सत्ता हस्तांतरण को जटिल व कठिन बनाने का ब्रिटिश प्रयास

- **देशी रियासतों को स्वायत्तता**
  भारतीय संघ के आंतरिक सुदृढ़ता को कमज़ोर करने के उद्देश्य से देशी रियासतों को भारत-पाक से स्वतंत्र अस्तित्व रखने का ब्रिटिश प्रावधान
- **सीमा विभाजन**
  - आम जनता के धार्मिक तथा सामाजिक महत्ता के स्थलों को अनदेखा करते हुए भारत-पाक सीमा विभाजन-रेडक्लिफ आयोग द्वारा
  - मैकमोहन रेखा की अस्पष्टता
- **वेवेल योजना (1945) तथा शिमला कॉन्फ्रेंस**
  - केंद्र में वायसराय तथा कमांडर इन चीफ को छोड़ शेष भारतीय सदस्यों वाले गठन का प्रस्ताव, रक्षा विभाग को छोड़कर शेष विभाग भारतीयों को
  - तुष्टिकरण की नीति के अंतर्गत मुस्लिमों को अधिक प्रतिनिधित्व
- **क्रिप्स मिशन (1942)**
  डोमिनियन दर्जे के साथ भारतीय संघ, देशी रियासतों के मनोनयन आदि का लोभ। पूर्ण स्वतंत्रता, एकल संविधान जैसे मुद्दों पर भारतीयों द्वारा अस्वीकृत।
- **अगस्त प्रस्ताव (1940)**
  2nd WW में भारतीयों का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से, युद्ध उपरांत डोमिनियन स्टेट का लोभ देना, भारतीय नेतृत्व द्वारा अस्वीकृत

2018

प्रश्नः वर्तमान समय में महात्मा गाँधी के विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये? (150 शब्द, 10 अंक)

Throw light on the significance of the thoughts of Mahatma Gandhi in the present times.

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। वस्तुतः गांधीजी की विचारधारा का सैद्धांतिक आधार सत्य और अहिंसा था। वर्तमान संदर्भ में उनके विचारों का व्यापक महत्त्व देखा जा सकता है।

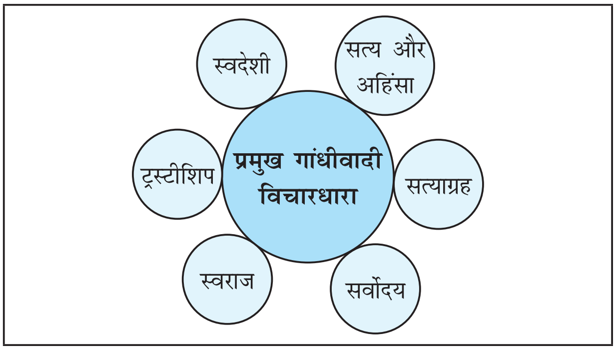

सत्य : सर्वोपरि सिद्धांत, सत्य को ईश्वर मानते थे। वर्तमान में मंत्रिगण तथा अफसर शपथ लेने के पश्चात् भ्रष्टाचार में लिप्त। सत्य का पालन किया जाए तो देश के नवनिर्माण की दिशा आगे बढ़ेगी।

अहिंसा : व्यक्तिगत जीवन से लेकर वैश्विक स्तर पर "मनसा वाचा कर्मणा" अहिंसा के सिद्धांत का पालन करने पर बल।

जैसे- आज संघर्षरत विश्व में अहिंसा जैसा आदर्श अति आवश्यक। इच्छाओं की न्यूनता पर बल। रूस-यूक्रेन युद्ध, इज़राइल-अरब विवाद।

सर्वोदय : सार्वभौमिक उत्थान या सभी की प्रगति-

जैसे- वर्ग विहीन, जाति विहिन और शोषण मुक्त समाज की स्थापना- रोहिंग्या मुद्दा, शिया सुन्नी हिंसा।

स्वराज : स्वशासन, आत्मनिर्भर व स्वायत्त ग्राम पंचायतों की स्थापना- अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति तक शासन।

कुटीर उद्योगों की स्थापना, जैसे कोरोना काल, महामंदी।

सत्याग्रह : प्रतिरोध का नैतिक ढाँचा अर्थात् सहयोग करना या चुप रहना, किसी भी अन्याय के सामने एकमात्र विकल्प।

महिला मुक्ति, करुणा, समय की पाबंदी और स्वच्छता गांधीवादी विचार अन्य आदर्श है।

अंतत : महात्मा गांधी के सभी आदर्शों और विचारों तक वे सत्य के साथ जीवन भर के प्रयोग की प्रक्रिया के माध्यम से पहुँचे और यह गांधीवादी विचारों को सबसे महत्त्वपूर्ण बनाता है।

2017

प्रश्न: सुस्पष्ट कीजिये कि मध्य 18वीं शताब्दी का भारत विखंडित राज्यतंत्र की छाया से किस प्रकार ग्रसित था?

(150 शब्द, 10 अंक)

Clarify how mid-eighteenth century India was beset with the spectre in the a fragmented polity.

उत्तर : 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में भारत पर मुगल साम्राज्य का शासन था। इसने लगभग संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँध रखा था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय साम्राज्य 18वीं शताब्दी के प्रारंभ तक स्थिर बना रहा, किंतु औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य तेज़ी से बिखरने लगा और इस अवधि में कई स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ-

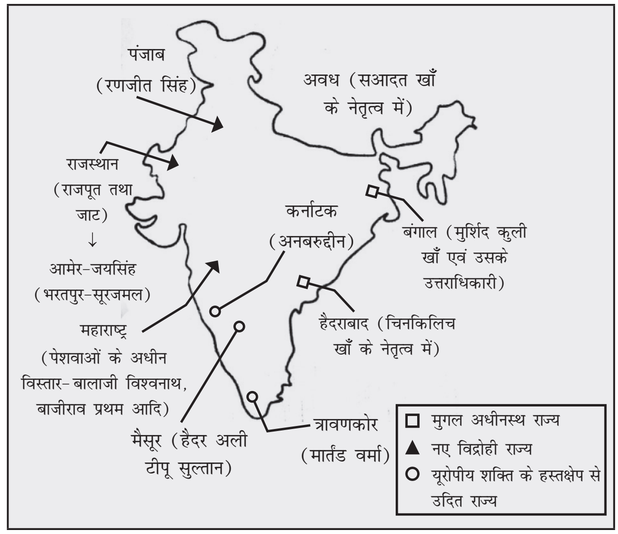

उपरोक्त घटनाओं के पश्चात् और नादिरशाह (1739) एवं अहमदशाह अब्दाली (1761) के आक्रमणों ने अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में मुगल साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त कर दिया। जिसका लाभ उठाकर एक ब्रिटिश व्यापारिक कंपनी प्लासी तथा बक्सर के युद्धों में विजयी होकर राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित हो गई।

प्रश्न: परीक्षण कीजिये कि औपनिवेशिक भारत में पारंपरिक कारीगरी उद्योग के पतन ने किस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अपंग बना दिया। **(250 शब्द, 15 अंक)**

Examine how the decline of traditional artisanal industry in colonial India crippled the rural economy.

उत्तर : ब्रिटिश विजय के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ों ने जब सत्ता संभाली तो पारंपरिक भारतीय कारीगरों ने विश्व पर शासन किया और उत्पादित सभी निर्मित सामानों की लगभग एक-चौथाई आपूर्ति की। जैसा कि पीटर महान ने कहा था कि "भारत का वाणिज्य विश्व का वाणिज्य है, जो इस पर अधिकार करेगा, वह विश्व का अधिनायक कहलाएगा"

18वीं सदी के मध्य पारंपरिक कारीगरी उद्योग के लिये विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई, जिसके निम्न कारण थे-

- **कृषि का वाणिज्यीकरण:** पारंपरिक ग्रामीण कृषि हतोत्साहित एवं पतनशील, गरीबी, भुखमरी, अकाल की बारंबारता।
- पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग ने शासकों, ज़मींदार आदि अपने कई संरक्षकों को खो दिया।
- 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा भारतीय बाज़ार ब्रिटिश व्यापारियों के लिये खोल दिया गया।
- औद्योगिक क्रांति के पश्चात् ब्रिटिश विनिर्मित सस्ती वस्तुओं से भारतीय हस्तशिल्प, प्रतियोगिता में हार गए।
- विभिन्न विनियमों तथा उच्च आयात-निर्यात शुल्कों के कारण भारतीय वस्तुओं को विदेशी बाज़ारों में प्रतिबंधित कर दिया गया।
- ब्रिटिश वस्तुओं पर आयात-निर्यात शुल्क शून्य कर दिया गया।

- कारीगर को खरीदार और विक्रेता, दोनों के रूप में नुकसान उठाना पड़ा।
- 19वीं शताब्दी के मध्य रेलवे के आगमन के बाद विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेज़ी आई।

पारंपरिक कारीगरी उद्योग के पतन ने, न केवल लाखों भारतीय कारीगरों के लिये समृद्ध आय के आधार को नष्ट कर दिया, बल्कि भारतीय कृषि की उत्पादकता और पारंपरिक भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के दोहरे स्तंभ पूरी तरह चरमरा गए। इस प्रकार मात्र 200 वर्षों (1757-1947) की छोटी-सी अवधि में युगों-युगों से आत्मनिर्भर और समृद्ध समूची ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूरी तरह पंगु हो गई। इसके आलोक में विलियम बैंटिक का कथन है "भारतीय बुनकरों की हड्डियाँ मैदानों में बिखरी पड़ी थीं।"

प्रश्न: क्या कारण था कि 19वीं शताब्दी के अंत तक आते-आते 'नरमदलीय' अपनी घोषित विचारधारा तथा राजनीतिक लक्ष्यों के प्रति राष्ट्र के विश्वास को जगाने में असफल हो गए थे? (150 शब्द, 10 अंक)

Why did the 'Moderates' fail to carry conviction with the nation about their proclaimed ideology and political goals by the end of the nineteenth century?

उत्तर: 19वीं शताब्दी के मध्य से ही भारत में राजनीतिक चेतना के नए युग की शुरुआत हो गई थी, किंतु इसे संस्थागत स्वरूप कांग्रेस की स्थापना (1885) के पश्चात् मिला। कांग्रेस के आरंभिक 20 वर्षों को 'नरमदलीय दौर' के नाम से जाना जाता है, जिसका नेतृत्व दादाभाई नौरोजी, फिरोज़शाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले आदि ने किया था।

नरमपंथियों की पद्धति: ब्रिटिश शासन में सुधार की मांग, प्रार्थना याचिका विरोध, अनुनय-विनय आदि।

नरमपंथियों का भारतीय स्वतंत्रता में योगदान

- ब्रिटिश संविधान में विश्वास - 1892 के एक्ट द्वारा बजट पर बहस का अधिकार।
- राजनीतिक शिक्षा द्वारा जनता में जागरूकता फैलाना, जैसे- धन का निकासी सिद्धांत, 1903 दिल्ली दरबार पर अपव्यय अकाल के समय।
- धार्मिक सुधार से सामाजिक जागृति ने जनता को प्रबुद्ध किया - विवेकानंद, दयानंद सरस्वती (स्वराज)।
- सबसे पहले भारतीयों में राष्ट्रीय जागृति पैदा की।
- नरमपंथी राष्ट्र की धारणा को कायम रखने में विफल रहे क्योंकि - 1905 उग्रवादी चरण का विकास।
- बंगाल में विपिनचंद्र पाल अरबिंदो घोष, महाराष्ट्र में तिलक और पंजाब में लाला लाजपत राय ने अनुनय-विनय की नीति की आलोचना की।
- 1896 में इथियोपिया द्वारा इटली, 1905 में जापान द्वारा रूस की पराजय ने यूरोपीय वर्चस्व के मिथक को तोड़ा।
- स्वराज के लक्ष्य के साथ निष्क्रिय प्रतिरोध और प्रत्यक्ष कार्रवाई वाली उग्रवादी विचारधारा जनता में लोकप्रिय हुई।

इस प्रकार नरमपंथी सुधार की अपनी घोषित विचारधारा के बारे में राष्ट्र को विश्वास दिलाने में विफल रहे। हालाँकि, वे सबसे पहले भारतीयों में राष्ट्रीय जागृति पैदा करने में सफल रहे, लेकिन उनके संघर्ष के तरीकों और राजनीतिक लक्ष्यों से मोहभंग हो गया और उग्रवादी चरण का राष्ट्रीय आंदोलन में उदय हुआ।

प्रश्न: आधुनिक भारत में महिलाओं से संबंधित प्रश्न 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन के भाग के रूप में उठे। उस अवधि में महिलाओं से संबद्ध मुख्य मुद्दे तथा विवाद क्या थे? (250 शब्द, 15 अंक)

The women's questions arose in modern India as a part of the 19th century social reform movement. What were the major issues and debates concerning women in that period?

उत्तर: ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बाद जब भारतीय मध्यम वर्ग पाश्चात्य शिक्षा तथा संस्कृति के संपर्क में आया तो उसे महसूस हुआ कि भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ तथा अंधविश्वास व्याप्त हैं। जाति प्रथा, धार्मिक अनुष्ठान तथा इससे संबद्ध रीति-रिवाज़ों और अमानवीय परंपराओं, जैसे- सतीप्रथा, विधवा विवाह निषेध, बाल विवाह, बहुविवाह, देवदासी प्रथा आदि के द्वारा उत्पीड़न हो रहा था।

चूँकि किसी भी देश की आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति बिना समाज सुधार के संभव नहीं है, अतः मध्यवर्ग ने इन चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया।

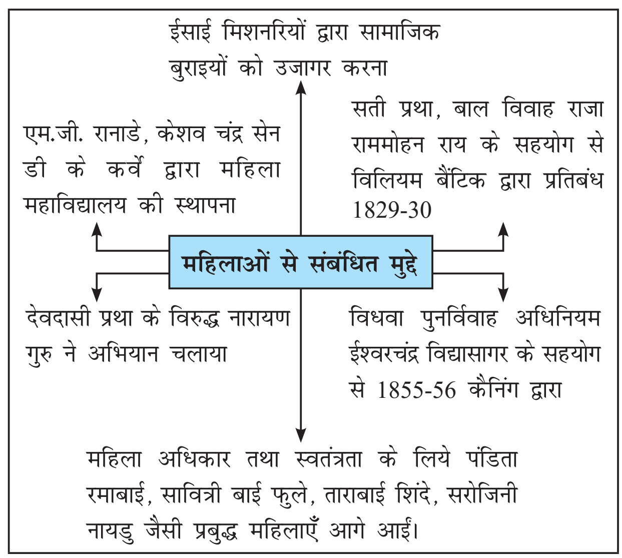

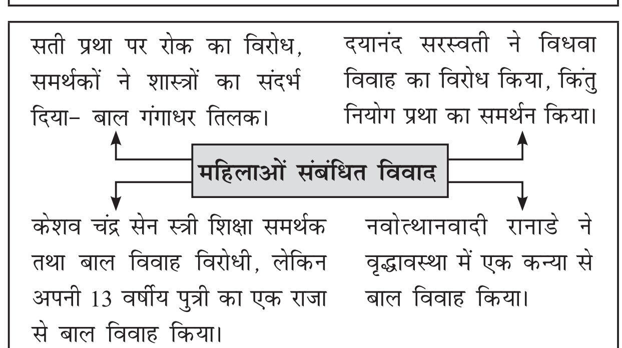

19वीं शताब्दी में महिलाओं के मुद्दे सामाजिक उत्थान से संबंधित थे। महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयास जारी थे, जिनमें धार्मिक-सामाजिक सुधार के साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता भी शामिल थी।

प्रश्न: बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से भारतीय स्वतंत्रता की स्वप्नदृष्टि के साथ संबद्ध हो गए नए उद्देश्यों के महत्त्व को उजागर कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

Highlight the importance of the new objectives that got added to the vision of Indian independence since twenties of the last century.

उत्तर: बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से भारतीय स्वतंत्रता की स्वप्नदृष्टि के साथ अनेक उद्देश्य संबद्ध हो गए, स्वतंत्रता आंदोलन के साथ महिला उत्थान तथा दलित उत्थान के कार्यक्रम को भी महत्त्व दिया गया। इस समय देश की राजनीति में साम्यवादी तथा समाजवादी तत्त्वों का समावेश हुआ, अब किसान तथा मज़दूरों के उत्थान और स्वतंत्रता की बात की जाने लगी।

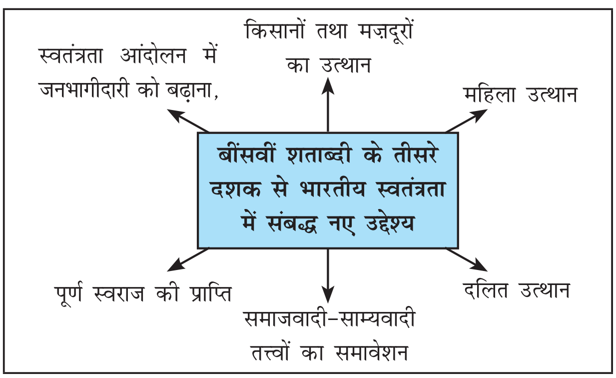

नए उद्देश्यों का महत्त्व:

- बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप बदला, असहयोग तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन में व्यापक जनभागीदारी बढ़ी।
- महिला उत्थान तथा आंदोलन में महिला भागीदारी के लिये कांग्रेस के अंदर महिलाओं का कद बढ़ाया गया जैसे- एनी बेसेंट तथा सरोजिनी नायडू को कांग्रेस अध्यक्ष बनाया गया।
- दलित उत्थान के लिये महात्मा गांधी, नरायण गुरू, डॉ. भीमराव अंबेडकर ने प्रयास किए, गांधी जी ने रचनात्मक कार्यों द्वारा तथा अंबेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा एवं संवैधानिक आरक्षण की मांग द्वारा दलित उत्थान का प्रयास किया।
- साम्यवादी विचारधारा के समावेश से मजदूर अधिकारों की मांग उठने लगी। एम.एन. राय के नेतृत्व में साम्यवादी दल की स्थापना तथा एन.एम. जोशी और वी.पी. वाडिया के नेतृत्व में ट्रेड यूनियन की स्थापना।
- समाजवादी विचारधारा के समावेश से किसानों के अधिकारों को बल मिला। प्रांतीय किसान सभा तथा भारतीय किसान सभा की स्थापना (जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचंद बोस का प्रभाव)
- कांग्रेस की मांगों मे परिवर्तन, स्वराज के स्थान पर पूर्ण स्वराज की मांग। (लाहौर अधिवेशन 1929) 1931 के कराची अधिवेशन में मौलिक अधिकारों तथा आर्थिक नीतियों को आकार दिया गया।

नए उद्देश्यों ने आज़ादी के बाद एक समाजवादी भारत के निर्माण के स्वप्न को प्रोत्साहित किया, साथ ही दलितों और महिलाओं के उत्थान के लिये चलाए गए कार्यक्रमों का ही परिणाम था कि स्वतंत्रता के पश्चात् इन वंचित वर्गों के उत्थान के लिये नीतियाँ बनाई जा सकी और सामाजिक न्याय की विचारधारा को मज़बूती मिली।

2016

प्रश्न: यह स्पष्ट कीजिये कि 1857 का विप्लव किस प्रकार औपनिवेशिक भारत के प्रति ब्रिटिश नीतियों के विकास क्रम में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक मोड़ है। (200 शब्द, 12½ अंक)

Explain how the Uprising of 1857 constitutes an important watershed in the evolution of British policies towards colonial India.

उत्तर: 1857 का विद्रोह भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी। इसके फलस्वरूप भारतीय समाज में कई वर्ग एकजुट हुए जिसने भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बो दिये। ब्रिटिश शोषण की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुए इस विद्रोह ने भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया था। भविष्य में इस तरह के विद्रोह से बचने तथा ब्रिटिश साम्राज्य को मज़बूती प्रदान करने के लिये अंग्रेज़ों ने अपनी संरचना और नीतियों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये, जो निम्न हैं-

सरकार की संरचना और नीतियों में परिवर्तन

- सामाजिक-धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप बंद, समुद्र पार यात्रा।
- 'फूट डालो राज करो' की नीति- मुसलमानों को राष्ट्रवादी आंदोलन के खिलाफ करने का प्रयास।
- 1858 का भारत सरकार अधिनियम प्रशासन में परिवर्तन-शासन करने की शक्ति कंपनी से ब्रिटिश क्राउन के हाथ में सौंप दी गई। 15 सदस्यीय भारत परिषद का गठन।
- प्रांतीय प्रशासन- भारत को प्रांतों में विभाजित किया गया- बंगाल, बॉम्बे और मद्रास। इसका संचालन एक गवर्नर और उसकी तीन सदस्यीय परिषद द्वारा।
- पुलिस और न्यायिक सुधार- कलकत्ता बंबई, मद्रास में उच्च न्यायालय की स्थापना।
- सेना में परिवर्तन- सेना के पुनर्गठन के लिये पील आयोग का गठन-यूरोपीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाया गया। तोपखाने, टैंकों का नेतृत्व यूरोपीय अधिकारियों के हाथ दिया गया। सेना में भर्ती पंजाब तथा गोरखा क्षेत्रों से की जाने लगी।
- रियासतों के साथ संबंध- गोद लेने का अधिकार पुन: दिया गया। अवध को अधिकांश क्षेत्र वापस कर दिये गए।

1861 भारतीय परिषद अधिनियम द्वारा शासन में भारतीयों को भागीदारी दी गई- पटियाला तथा काशी के महाराज और सर दिनकर राव को शामिल किया गया।

ब्रिटिश सरकार ने लंबे समय तक चलने वाले साम्राज्य के उद्देश्य से भारत पर अपनी पकड़ मज़बूत करना शुरू किया। भविष्य में विद्रोह की किसी भी संभावना से बचने के लिये बड़े कानूनों, जैसे- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, आर्म्स एक्ट इत्यादि पारित किये गए एवं औपनिवेशिक हितों से संबंधित रेलवे, डाक एवं संचार व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण किया गया।

प्रश्न: स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में सुभाषचंद बोस एवं महात्मा गांधी के मध्य दृष्टिकोण की भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये?

(200 शब्द, 12½ अंक)

Highlight the differences in the approach of Subhash Chandra Bose and Mahatma Gandhi in the struggle for freedom.

उत्तर: महात्मा गांधी और सुभाषचंद बोस भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दो प्रमुख व्यक्तित्व थे। दक्षिण अफ्रीका से 1915 में स्वदेश वापसी के कुछ वर्षों पश्चात् गांधीजी राष्ट्रीय आंदोलन का एक प्रमुख चेहरा बन गए थे, जबकि सुभाषचंद्र बोस भारतीय राजनीति का उभरता हुआ चेहरा थे। दोनों ने ही औपनिवेशिक शोषण से स्वतंत्रता दिलाने के लिये संघर्ष किया, लेकिन अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु इनकी विचारधाराएँ एवं रणनीतियाँ अलग-अलग थीं।

आधार	भिन्नता के बिंदु
अहिंसा बनाम उग्रवादी दृष्टिकोण	गांधीजी अहिंसा और सत्याग्रह में दृढ़ विश्वास रखते थे, जबकि सुभाष चंद्र बोस हिंसक प्रतिरोध से साम्राज्यवादी शासन को खदेड़ना चाहते थे।
साधन साध्य	बोस की नज़र परिणाम पर थी। उनके लिये रूस, जापान, जर्मनी से मदद लेना नैतिक मुद्दा नहीं था, लेकिन गांधीजी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये साधन तथा साध्य दोनों की पवित्रता आवश्यक मानते थे।
सरकार के रूप में	गांधी का आदर्श राज्य रामराज्य पर आधारित था। वे केंद्रीयकरण के विरोधी थे, जबकि बोस राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिये लोकतांत्रिक प्रणाली को पर्याप्त नहीं मानते थे।
सैन्यवाद	बोस सैन्य अनुशासन के प्रति बहुत आकर्षित थे (आज़ाद हिंद फौज), जबकि गांधी सेना के खिलाफ थे। उनका रामराज्य सत्य, अहिंसा तथा आत्मनियमन पर आधारित था।
अर्थव्यवस्था	गांधी स्वराज की अवधारणा, राज्य के नियंत्रण बिना एक विकेंद्रीकरण अर्थव्यवस्था चाहते थे, जबकि बोस बड़े औद्योगिकरण के पक्ष में थे।
शिक्षा	गांधी अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के खिलाफ थे, जबकि बोस अंग्रेज़ी तकनीक और वैज्ञानिक शिक्षा के पक्षधर थे।

इन भिन्नताओं के बावजूद इनकी रणनीतियों एवं विचारधाराओं में कुछ समानता के बिंदु भी देखे जा सकते हैं-

- दोनों व्यक्तियों ने स्वतंत्र भारत में समाजवाद को आगे बढ़ाने का मार्ग माना।
- दोनों धार्मिक व्यक्ति थे और साम्यवाद को नापसंद करते थे।
- उन्होंने छुआछूत के खिलाफ काम किया और महिलाओं की मुक्ति की बात की।

गांधी और सुभाषचंद्र बोस की अलग विचारधाराओं के बावजूद दोनों का लक्ष्य ब्रिटिश औपनिवेशिक दासता से भारत को मुक्ति दिलाना था। इसी कारण भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की इन दो महान विभूतियों ने राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना से अमूल्य योगदान दिया।

प्रश्न: स्वतंत्रता संग्राम में, विशेषतौर पर गांधीवादी चरण के दौरान महिलाओं की भूमिका का विवेचन कीजिये।

(200 शब्द, 12½ अंक)

Discuss the role of women in the freedom struggle especially during the Gandhian phase.

उत्तर: सामाजिक रूढ़ियों एवं बंधनों को दरकिनार करते हुए महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़कर भाग लिया। 1857 की क्रांति से लेकर स्वदेशी आंदोलन तक इनकी संख्या सीमित थी। गांधीवादी चरण में महिलाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई। उन्होंने न केवल आंदोलन का नेतृत्व किया वरन् वे पुरुषों के साथ जेल भी गईं।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गांधीवादी चरण से पहले:

- 1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हज़रत महल ने अंग्रेज़ी अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष किया।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान विदेशी कपड़ों का बहिष्कार तथा शराब की दुकानों पर धरना तक सीमित।
- महिलाओं की भागीदारी के दूसरे चरण में होमरूल और संवैधानिकता का विचार प्रमुख हो गया। एनी बेसेंट ने होमरूल आंदोलन चलाया तथा कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनी।

गांधीवादी चरण के दौरान:

- गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं ने आंदोलनों में प्रमुख भूमिका निभाई।
- अनसुइया बेन ने अहमदाबाद मिल हड़ताल में गांधी जी का साथ दिया।
- असहयोग आंदोलन में महिलाओं नें खादी वस्त्रों की बिक्री की, बसंती देवी एवं उर्मिला देवी के नेतृत्व में।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन में विजयलक्ष्मी पंडित तथा सरोजिनी नायडू ने नेतृत्वकारी भूमिका निभाई जैसे-धरसना डिपो पर धरना।
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान ऊषा मेहता ने गुप्त कांग्रेस रेडियो का संचालन किया तथा सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली ने भूमिगत रहकर आंदोलन का संचालन किया।

- क्रांतिकारी महिलाओं में कल्पना दत्त (चटगाँव आर्मरी रेड), बीना दास (बंगाल के गवर्नर पर हमला) आदि प्रमुख थीं।
- लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में इंडियन नेशनल आर्मी की रानी झाँसी रेजीमेंट का गठन किया गया।

स्वतंत्रता संघर्ष में गांधीजी के आगमन के पश्चात् महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई, लेकिन यह वृद्धि समाज के उच्च वर्ग या उच्च मध्य वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित रही। नेतृत्व के स्तर पर दलित, आदिवासी महिलाओं की संख्या नगण्य थी, लेकिन इन सबके बावजूद स्वतंत्रता संघर्ष के गांधीवादी चरण में महिलाओं ने भागीदारी कर सार्वजनिक जीवन में अपना स्थान बनाया।

2015

प्रश्न: अपसारी उपागमों और रणनीतियों के होने के बावजूद, महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर का दलितों की बेहतरी का एक समान लक्ष्य था। स्पष्ट कीजिये।

(200 शब्द, 12½ अंक)

Mahatma Gandhi and Dr. B.R. Ambedkar, despite having divergent approaches and strategies, had a common goal of amelioration of the downtrodden. Elucidate.

उत्तर: स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान राजनीतिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक सुधार के भी प्रयास किये गए। इन सामाजिक सुधारों में जाति-प्रथा, छुआछूत, भेदभाव एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जनमत तैयार करने एवं इसके उन्मूलन का प्रयास किया गया। इसी संदर्भ में दलित सुधार संबंधी मुद्दा गांधीजी एवं अंबेडकर के मध्य रणनीतिक भिन्नता के कारण चर्चा में रहा।

गांधीजी और अंबेडकर के भिन्न दृष्टिकोण और रणनीतियाँ

गांधीजी	अंबेडकर
❑ छुआछूत जाति प्रथा के कारण नहीं वरन् उच्च एवं निम्न वर्ग के कृत्रिम बंटवारे का प्रतिफल। ❑ जाति और वर्णाश्रम की काट भारतीय परंपरा में ही ढूंढने का प्रयास। ❑ गांधीजी शास्त्रों का हवाला देकर कुरीतियों को समाप्त करना चाहते थे। ❑ गांधी जी का मानना था कि छुआछूत निवारण के मुद्दे को अंतर्जातीय विवाद और अन्य ऐसे मुद्दों से नहीं जोड़ा जा सकता।	❑ अछूत शब्द को जाति प्रथा की देन मानते थे। ❑ जाति-प्रथा को समाप्त किये बिना अछूतोद्धार असंभव। ❑ जाति व्यवस्था को बिना सुधार के पूर्णतः समाप्त करना। ❑ अंतर्जातीय विवाह, साथ खान-पान, शिक्षा प्रसार एवं पृथक् निर्वाचन द्वारा दलितों की स्थिति सुधारना चाहते थे।

दलितों के उत्थान का एक समान लक्ष्य

- ❑ अंबेडकर ने दलितों को सशक्त बनाने के लिये बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की।
- ❑ गांधी जी ने आत्मविश्वास जगाने हेतु 'हरिजन' शब्द गढ़ा।
- ❑ अंबेडकर ने दलितों के लिये सार्वजनिक स्थान खोलने के लिये सत्याग्रह किया।
  - ◆ गांधी ने भी सक्रियता से भाग लिया, जिस प्रकार केरल मंदिर प्रवेश में लिया था।
- ❑ दोनों अस्पृश्यता विरोधी
- ❑ दोनों महिलाओं को सशक्त बनाने के पक्षधर।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भले ही दोनों की विचारधारा एवं रणनीतियाँ भिन्न हों, किंतु दोनों का मूल उद्देश्य दलित उत्थान ही था, दोनों इस विषय में एकमत थे कि दलितों की स्थिति में सुधार शिक्षा के प्रसार एवं जनजागरूकता द्वारा हो सकता है।

प्रश्न: महात्मा गांधी के बिना भारत की स्वतंत्रता की उपलब्धि कितनी भिन्न हुई? चर्चा कीजिये। (200 शब्द, 12½ अंक)

How different would have been the achievement of Indian independence without Mahatma Gandhi? Discuss.

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता विभिन्न वर्गों एवं विचारधाराओं के सम्मिलित प्रयासों का परिणाम थी। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध अलग-अलग रणनीतियों एवं रास्तों के द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया। महात्मा गांधी के बिना स्वतंत्रता का स्वरूप कैसा होता, इसका उत्तर उनकी रणनीति एवं विचारों के अध्ययन के पश्चात् ही दिया जा सकता है।

महात्मा गांधी के बिना भारतीय स्वतंत्रता

- आंदोलन हिंसक हो सकते थे, किंतु गांधी जी ने अपने तरीकों द्वारा शांतिपूर्ण बनाए रखा उदाहरण- अहिंसा, वर्ग समन्वय आदि।
- गांधी के बिना इतने कम समय में इतनी बड़ी लामबंदी नहीं होती उदाहरण रचनात्मक कार्यों के माध्यम से (चरखा चलाना, नमक बनाना)।
- सांप्रदायिक ताकतें देश के राजनीतिक परिदृश्य पर हावी हो सकती थीं।
- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन अधिक सफल नहीं होते उदा.- खादी पर बल देकर गांधी ने स्वदेशी को बढ़ावा दिया।
- विभिन्न वर्गों, जैसे- महिलाओं, उद्योगपतियों, छात्रों और किसानों को शामिल करने में अधिक समय लगता, क्योंकि कांग्रेस का प्रभाव एक निश्चित वर्ग तक सीमित था।
- नागरिक एवं लोकतांत्रिक अधिकारों के बिना स्वतंत्रता प्राप्त होती।
- भाषायी, धार्मिक, जातीय विविधता वाले देश की एकीकृत राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया अधूरी रह जाती।
- स्वतंत्रता के संवैधानिक एवं राजनीतिक आदर्श भिन्न होते।

महात्मा गांधी के बिना अगर स्वतंत्रता प्राप्त हुई होती तो संभव था कि हमारे देश में लोकतंत्र की जगह कम्युनिस्ट शासन पद्धति या किसी

एक वर्ग के अधिकार की शासन पद्धति लागू होती। महिलाएँ, दलित एवं अल्पसंख्यक स्वतंत्रता के पश्चात् भी अपने अधिकारों से वंचित रहते। आधुनिक भारतीय शासन प्रणाली एवं राजनीति में हिंसा के द्वारा प्राप्त लक्ष्य को सामाजिक एवं राजनीतिक स्वीकृति प्राप्त होने लगती। महात्मा गांधी के बिना यह स्वतंत्रता मूल्यविहीन होती।

2014

प्रश्नः किन प्रकारों से नौसैनिक विद्रोह भारत में अंग्रेज़ों की औपनिवेशिक महत्त्वकांक्षाओं की शव-पेटिका में लगी अंतिम कील साबित हुआ था? (150 शब्द, 10 अंक)

In what ways did the naval mutiny prove to be the last nail in the coffin of British colonial aspirations in India?

उत्तर : फरवरी 1946 में घटित नौसैनिक विद्रोह, कमज़ोर होते हुए ब्रिटिश राज पर अंतिम निर्णायक प्रहार था। इस विद्रोह के पश्चात् आज़ाद हिंद फौज के युद्धबंदियों के मामले ने पुनः जनता को उद्वेलित कर इस आंदोलन की पृष्ठभूमि को आधार प्रदान किया।

नौसैनिक विद्रोह की शुरुआत के पीछे कारण

- भारतीय नाविकों के साथ नस्लवादी भेदभाव तथा उन्हें अंग्रेज़ सैनिकों से कम वेतन दिया जाना।
- आज़ाद हिंद फौज पर ब्रिटिश सरकार द्वारा मुकदमा चलाया जाना।
- इंडोनेशिया में भारतीय सेना का प्रयोग ब्रिटिश औपनिवेशिक हित में किया जाना, जिसे नाविकों ने वापस बुलाने की मांग की।
- एच.एम.आई.एस. तलवार की दीवार पर 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' लिखने पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया, फलस्वरूप विद्रोह की भावना भड़कना।

शव पेटिका में अंतिम कील साबित कैसे हुआ नौसेना विद्रोह

- जनता के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव, जिससे मनोबल में वृद्धि हुई।
- भारतीय जनता के बेखौफ लड़ाकूपन की क्षमता प्रदर्शित हुई।
- आज़ाद हिंद फौज के केवल उन्हीं सैनिकों पर मुकदमा चलाया गया, जो अपराधों में शामिल थे।
- इंडोनेशिया व हिंद-चीन से सेना को वापस बुलाना।
- सैनिकों की स्वामिभक्ति, जो अंग्रेज़ों की नींव थी, अब कमज़ोर पड़ चुकी थी।
- विद्रोह का प्रसार अधिक व्यापक हुआ।

यह विद्रोह अंग्रेज़ों की दमनकारी नीति के विरुद्ध निर्भीकता का प्रदर्शन था, क्योंकि इस घटना के पश्चात् भारत से ब्रिटिश राज का अंत हो गया।

प्रश्नः पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में लड़ा गया था। क्या कारण है कि इतनी अधिक साम्राज्य-प्रकंपी लड़ाइयाँ पानीपत में लड़ी गईं। (150 शब्द, 10 अंक)

The third battle of Panipat was fought in 1761. Why were so many empire-shaking battles fought at Panipat?

उत्तर : पानीपत का तृतीय युद्ध 14 जनवरी, 1761 को अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच लड़ा गया। इस युद्ध में मराठों की हार ने यह सिद्ध कर दिया कि वे कमज़ोर होते मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते हैं। तृतीय पानीपत युद्ध की तरह प्रथम और द्वितीय पानीपत युद्ध की गिनती भी इतिहास के निर्णायक युद्धों में की जाती है।

अधिकांश साम्राज्य प्रकंपी लड़ाइयाँ पानीपत में होने के कारण

- पानीपत हमेशा दिल्ली का प्रवेश द्वार
- शत्रुओं को आगे बढ़ने से रोकना, उदा.- दिल्ली के शासक उत्तर पश्चिम से आए हुए आक्रमणकारियों को पानीपत में ही रोक देना चाहते थे।
- अवस्थिति, उदा.- अपेक्षाकृत कम जनसंख्या का क्षेत्र, जो युद्ध के लिये उपयुक्त स्थान था।
- मध्यबिंदु की भूमिका में, उदा.- पंजाब पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् पानीपत दिल्ली पहुँचने का मध्यबिंदु बन जाता था।
- युद्ध क्षेत्र तक विभिन्न पहलुओं को पहुँचाना, उदा.- पानीपत के पास से ग्रांड ट्रंक रोड गुज़रती थी। अतः दिल्ली के शासकों के लिये युद्ध क्षेत्र तक सैन्य सामान एवं रसद की आपूर्ति कराना आसान।

उपरोक्त सभी कारण किसी भी लड़ाई के लिये अनुकूल स्थितियाँ प्रदान करते हैं, इसलिये शासकों ने पानीपत के मैदान को चुना।

प्रश्नः भारत में 18वीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेज़ों की आर्थिक नीतियों के विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Examine critically the various facets of economic policies of the British in India from mid-eighteenth century till independence.

उत्तर : भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन और फिर धीरे-धीरे उसका भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम था। 1858 तक ईस्ट इंडिया कंपनी, फिर उसके बाद प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन ने भारतीय आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था के सभी पहलुओं को प्रभावित किया। परंतु इसका व्यापक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में देखने को मिला।

जहाँ 17वीं शताब्दी में अंग्रेज़ों के आगमन से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि में आत्मनिर्भर, हथकरघा एवं हस्तशिल्प में बेहतर और वैश्विक व्यापार में अग्रणी थी। वहीं आज़ादी के समय भारत कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होते हुए भी अनाज का आयातक देश था तथा इसकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी, जिसके लिये मुख्यत: ब्रिटिश नीतियाँ ज़िम्मेदार थीं।

1757 से 1813 तक अंग्रेज़ों की आर्थिक नीतियाँ व्यापारिक पूंजीवाद के हितों से संचालित थीं। इसमें कंपनी का उद्देश्य अधिकाधिक राजस्व संग्रह करना था, ताकि व्यापार-वाणिज्य में उसका अधिक से अधिक निवेश कर शेयरधारकों को फायदा पहुँचाया जा सके। इसके लिये कंपनी ने अपनी राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग किया। उसने कपास की बिक्री पर अपना एकाधिकार कायम कर भरपूर मुनाफा कमाया। कंपनी ने बुनकरों को कम कीमत पर माल बेचने के लिये विवश किया। कंपनी ने नवीन भू-राजस्व पद्धति प्रारंभ की, जिसमें भू-राजस्व की दर अधिक रखी गई तथा किसानों के अधिकारों को छीन लिया गया। इस भू-राजस्व से भारत का माल खरीदकर ब्रिटेन में बेचा गया। इस तरह भारत से धन का बहिर्गमन प्रारंभ हो गया। इस दौर में कंपनी ने सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई।

18वीं शताब्दी के अंतिम चरणों में ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई, जिससे एक नया पूंजीपति वर्ग आया। इस वर्ग के दबाव के कारण औपनिवेशिक नीतियाँ व्यापारिक पूंजीवाद से औद्योगिक पूंजीवाद के हितों की तरफ मुड़ गईं। अत: 1813 के पश्चात् मुक्त व्यापार का दौर प्रारंभ हुआ। यह मुक्त व्यापार केवल ब्रिटेन के लिये था अर्थात् इसमें भारत का दरवाज़ा ब्रिटेन निर्मित सामान के लिये खोल दिया गया। अब भारत से कच्चे माल, जैसे-कपास, रेशम, अनाज का निर्यात ब्रिटेन को तथा ब्रिटेन द्वारा तैयार माल का आयात भारत को किया जाने लगा। इस नीति के सफल कार्यान्वयन के लिये अंग्रेज़ों ने साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई, जिसे लॉर्ड हेस्टिंग्स से डलहौज़ी तक ने पूरा किया। इस दौर में अंग्रेज़ों ने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति को छोड़ दिया।

1860 तक ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति द्वितीय चरण में पहुँच गई थी। ब्रिटेन सहित अन्य औद्योगिक देशों में पूंजी का संचय हो चुका था, किंतु पूंजी निवेश की समस्या थी। इस समस्या से निबटने के लिये अंग्रेज़ों ने वित्तीय पूंजीवाद की नीति अपनाई। इसके तहत ब्रिटिश पूंजी का भारत आगमन हुआ जो कि रेलवे, बागान, जहाज़रानी व सरकारी ऋण में लगाई गई। इससे भारतीय जनता को कोई फायदा नहीं हुआ, वरन् वेतन, मुनाफा, ब्याज इत्यादि के रूप में धन का बर्हिगमन ही होता रहा।

लेकिन इसके नकारात्मक प्रभावों से अलग अगर सकारात्मक पक्ष की तरफ देखें तो इसने भारतीय अर्थव्यवस्था में आधारभूत ढाँचों, जैसे-यातायात, संचार के साधन, वित्तीय संस्थाओं इत्यादि के विकास में सीमित योगदान दिया। इसके अलावा बजट निर्माण की प्रक्रिया, कृषि मंत्रालय अकाल नीति, श्रम नीति इत्यादि ने बेहतर भविष्य के लिये आधार तैयार किया।

अत: उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में नकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ा। 18वीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक ब्रिटेन द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का परंपरागत ढाँचा छिन्न-भिन्न हो गया। भारतीय किसानों और बुनकरों ने वाणिज्यिक इतिहास की सबसे भयावह दरिद्रता का सामना किया। औपनिवेशिक नीति के कारण जहाँ भारत गरीबी के दुश्चक्र में फँस कर अल्प विकसित देश हो गया, वहीं ब्रिटेन औद्योगिक क्रांति के बलबूते औद्योगिक राष्ट्र बन गया।

2013

प्रश्न: अनेक विदेशियों ने भारत में बसकर विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका का विश्लेषण कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

Several foreigners made India their homeland and participated in various movements. Analyze their role in the Indian struggle for freedom.

उत्तर : प्राचीन काल से 'आतिथ्य की भूमि' रही भारत राष्ट्र अपने औपनिवेशिक युग में भी स्वाधीनता संघर्ष में अनेक विदेशियों को आकर्षित करने में सफल रहा। विशेषकर गांधीवादी चरण (1917-1947 ई.) में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विरोध के अहिंसात्मक तथा सत्याग्रह स्वरूप से स्वत: प्रेरित होकर अनेक विदेशी लोगों ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में अपना अमूल्य योगदान दिया।

प्रमुख विदेशी नागरिकों की स्वतंत्रता संघर्ष में भूमिका

- **एनी बेसेंट:** आयरिश मूल की ये महिला भारत में 'स्वशासन की मांग' से लेकर होमरूल लीग (सितंबर 1916) की स्थापना की। इसके अलावा 1917 में INC की अध्यक्षता करने वाली प्रथम महिला सहित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्थापक थीं।
- **मैडलिन स्लेड (मीरा बेन):** गांधीजी के विचारों/दर्शन से प्रेरित, ब्रिटिश महिला स्लेड के भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति समर्पण तथा सेवा भाव से प्रभावित होकर गांधी जी ने उन्हें 'मीरा बेन' की उपाधि दी।
- **बी.जी. होरीमन:** बॉम्बे क्रॉनिकल अखबार के संपादक; अपने प्रकाशन के द्वारा भारत में ब्रिटिश सरकार के जलियाँवाला बाग नरसंहार सहित अनेक बर्बर कार्यवाहियों से दुनिया को अवगत करवाया।
- **सैमुअल स्टॉक्स:** 1920 के दशक में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके अलावा भारत में बलात् श्रम जैसे आधुनिक गुलामी के प्रति आवाज़ उठाई।
- **नेल्ली सेन गुप्ता:** ब्रिटिश मूल की इस महिला ने बहिष्कार तथा असहयोग आंदोलन में भी भाग लिया।

निष्कर्ष

गांधीवादी विचारों से प्रभावित सी.एफ. एंड्रयू कैथरीन हैलमैन जैसे अनेक विदेशियों ने जिस प्रकार औपनिवेशिक भारत को स्वाधीनता दिलवाने में नैतिक सहायता प्रदान की, उसी प्रकार वर्तमान संदर्भ में ऋषि सुनक, सुंदर पिचाई तथा सत्या नडेला जैसे व्यक्तित्व भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रसारित कर रहे हैं।

प्रश्न: आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर भारतीय महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहीं। विवेचना कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

Defying the barriers of age, gender and religion, the Indian women became the torch bearer during the struggle for freedom in India. Discuss.

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के 1857 ई. के आरंभिक चरणों से लेकर 1947 के स्वतंत्रता प्राप्ति तक देश की आधी आबादी ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में गांधी, नेहरू तथा बोस जैसे प्रभावशाली नेतृत्व ने स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय महिलाओं की भागीदारी को आयु, लिंग तथा धर्म जैसी बाधाओं से भी स्वतंत्र कर दिया।

स्वतंत्रता संघर्ष के आरंभिक चरण

- **रानी चेन्नमा:** 1824 ई. में कित्तूर (कर्नाटक) में अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह किया।
- **रानी लक्ष्मीबाई:** 1855 ई. में अंग्रेजों के हड़प नीति के विरुद्ध झाँसी में ब्रिटिश कंपनी के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व। 8 जून, 1858 ई. को वीरगति प्राप्त ब्रिटिश अधिकारी ह्यूरोज के अनुसार **'विद्रोहियों में एकमात्र मर्द'।**
- **वीरांगना झलकारीबाई:** रानी लक्ष्मीबाई के विद्रोही गुट की एक नेतृत्वकर्त्ता, जिनके दुर्गा दल में मोतीबाई, काशीबाई, जूही जैसी कम उम्र की महिलाओं की भी उपस्थिति रही।
- **बेगम हज़रत महल:** अधेड़ उम्र तथा पर्दा प्रथा (इस्लाम) में रहने वाली हज़रत महल ने लखनऊ में अंग्रेज़ों के विरुद्ध अपना नेतृत्व प्रदान किया।
- **रहीमी, ऊदादेवी, आशादेवी, हैदरीबाई:** हज़रत महल के सैनिक दल की प्रमुख महिलाएँ। इनके अन्य सहयोगियों में शोभा देवी, महावीरी देवी, सहेजा वाल्मीकि, नामकौर, हबीबा जैसी- सभी जाति-धर्म की महिलाएँ शामिल थीं।

स्वतंत्रता संघर्ष का आधुनिक चरण

- **एनी बेसेंट:** विदेशी मूल की महिला, होमरूल लीग-1916, INC की प्रथम अध्यक्षा
- **सरोजिनी नायडू:** 1929 ई. में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता; पीकेटिंग, बहिष्कार तथा असहयोग आंदोलनों की प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता।
- **रानी गाइदिंल्यू:** पूर्वोत्तर भारत की 13 वार्षिय युवा स्वतंत्रता सेनानी।
- **विजयलक्ष्मी पंडित:** समृद्धशाली वर्ग की गांधीवादी नेत्री, असहयोग आंदोलन की प्रभावी उपस्थिति।
- **कस्तूरबा गांधी:** नमक सत्याग्रह में भागीदारी तथा नेतृत्व।
- **अरुणा आसफ अली:** भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बॉम्बे के गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया: (अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष)।
- **उषा मेहता:** भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भूमिगत रूप से रेडियो नेटवर्क की संचालिका।

निष्कर्षत: स्वतंत्रता संघर्ष में भीखाजी कामा, रामादेवी चौधरी, बसंती देवी जैसी अन्य महिलाओं का भी योगदान रहा, जिनके सम्मिलित प्रयासों से भारत राष्ट्र दासता मुक्त हुआ। वर्तमान में एला भट्ट (SEWA संस्था की संस्थापिका), गीता गोपीनाथ, अरुणा राय जैसी महिलाएँ भारतीय महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु उत्प्रेरित कर रही हैं।

प्रश्न: अनेक प्रकार से लॉर्ड डलहौजी ने आधुनिक भारत की नींव रखी थी। व्याख्या कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

In many ways, Lord Dalhousie was the founder of modern India. Elaborate.

उत्तर: ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के मुख्य उद्देश्य से प्रेरित लॉर्ड डलहौजी ने अपने 1848-56 ई. के कालखंड में आधुनिकीकरण की दिशा में अनेक प्रयास किये। राष्ट्रवादी इतिहासकारों के एक वर्ग के अनुसार इस सुधार द्वारा भारतीय समाज में साम्राज्यवादी शक्ति को स्वीकार्य करवाने का प्रयास ही निहित था।

डलहौजी द्वारा आधुनिकीकरण के प्रतीक माने जाने वाले क्षेत्रकों में किये गए प्रयास

(i) परिवहन

- रेलवे माइनूट (1853)
- बॉम्बे-थाणे के मध्य प्रथम रेल संचालन (1853)
- कलकत्ता-रानीगंज के मध्य दूसरी ट्रेन का परिचालन (1854 ई)
- डाक विभाग को स्वतंत्र विभाग में स्थापित कर डायरेक्टर जनरल की नियुक्ति
- डाक सेवा में अखिल भारतीय स्तर पर 'पेनी पोस्टल प्रथा' प्रारंभ

(ii) संचार

- आगरा-कलकत्ता के बीच प्रथम तार सेवा (1854 ई.)
- डाक विभाग को स्वतंत्र विभाग में स्थापित कर डायरेक्टर जनरल की नियुक्ति
- डाक-सेवा में अखिल भारतीय स्तर पर 'पेनी पोस्टल प्रथा' प्रारंभ

(iii) सिंचाई

- गंगा नहर को खोला गया (1854 ई.)
- सिंचित क्षेत्र विस्तार हेतु नहरों का निर्माण व विस्तार

(iv) शिक्षा

- वुड्स डिस्पैच नीति (1854)
- एंग्लो-वर्नाक्यूलर नीति के तहत स्थानीय भाषा में स्कूल व कॉलेजों का निर्माण

(v) सार्वजनिक कार्य

- प्रत्येक प्रांत में 'लोक निर्माण' विभाग की स्थापना
- PWD स्वतंत्र विभाग बना, चीफ इंजीनियर को प्रधान निगरानी अधिकारी बनाना

(vi) व्यावसायिक सुधार

- भारत के व्यापार को स्वतंत्र व्यापार नीति के अंतर्गत सबके लिये खोलना।
- कराची, कलकत्ता तथा बंबई जैसे बंदरगाहों का विकास तथा प्रकाश स्तंभ का निर्माण।

निष्कर्षत: डलहौजी के उपरोक्त प्रयास भले ही औपनिवेशिक हितों से परिचालित रहे हो, परंतु इसने अनिच्छा में ही सही, 21वीं सदी के वर्तमान भारत का भ्रूण अपने शासन के दौरान ही अधिरोपित कर दिया था। अत: इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आधुनिक भारत की नींव डलहौजी के काल में रखी गई थी।